पाठ 4

492P49

नीति के दोहे

(दिये गये कबीर और रहीम के दोहों में आचार-विचार सम्बन्धी जीवन-मूल्यों का वर्णन है।)

कबीरदास

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।

मुई खाल की स्वाँस सो, सार भसम ह्वै-जाय।।

मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।

स्रवन द्वार ह्वै संचरे, सालै सकल सरीर।।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो दिल खोजा आपनो, मुझ-सा बुरा न कोय।।

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।

सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय ।।

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।

माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आए फल होय।।

कबीरदास जी का जन्म काशी में सन् 1398 ई0 के लगभग हुआ था। भक्तिकाल के निर्गुण धारा के सन्त कवियों में कबीरदास का विशिष्ट स्थान है। रामानन्द कबीर के गुरु माने जाते हैं। उन्होंने भक्ति विषयक रचनाओं के साथ ही समाज- सुधार की कविताएँ भी लिखीं। इनकी रचनाओं का संग्रह 'बीजक' है। इसके तीन भाग हैं: 'साखी', 'सबद', 'रमैनी'। कबीरदास की मृत्यु सन् 1518 ई0 के लगभग मगहर में हुई ।

रहीम

वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।

बाटनवारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग।।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।।

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।

सुनी अठिलैहंे लोग सब, बाँटि न लैहें कोय।।

जो बड़ेन को लघु कहें, नहिं रहीम घटि जाँहि।

गिरधर मुरलीधर कहे, कछु दुःख मानत नांिहं।।

समय लाभ सम लाभ नहिं, समय चूक सम चूक।

चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक।।

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।

सुनी अठिलैहें लोग सब, बाँटि न लैहें कोय।।

जो बड़ेन को लघु कहें, नहिं रहीम घटि जाँहि।

गिरधर मुरलीधर कहे, कछु दुःख मानत नाहिं।।

समय लाभ सम लाभ नहिं, समय चूक सम चूक।

चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक।।

रहीम का जन्म सन् 1556 ई0 के लगभग हुआ था। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। अकबर के दरबार के नवरत्नों मंे इन्हें स्थान प्राप्त था। ये अरबी, फारसी तथा संस्कृत भाषा के विद्वान थे। इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं- 'रहीम सतसई', 'रास पंचाध्यायी'। इनकी मृत्यु सन् 1626 ई0 में हुई|

शब्दार्थ

औषधी = दवा। **कटुक** = कड़वा। **सालै** = बेधता है। **बाटनवारे** = सिलबट्टे पर पीसने वाला। **सार** = उपयोगी। **सुभाय** = स्वभाव/व्यवहार, **थोथा** = व्यर्थ/अनुपयोगी। **बिथा** = व्यथा, दुख। **गोय** = छिपाना/छिपाकर। **हूक** = कसक।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. बाल अखबार में हर बार एक नीति परक वाक्य लिखिए और कक्षा में लगाइए|

2. शिक्षक की मदद से कक्षा के सभी बच्चे दो भागों में बंट जाएँ| इनमें से एक भाग के बच्चे कबीर, दूसरे भाग के बच्चे रहीम के दोहे याद करने की ज़िम्मेदारी लें| बाल सभा में इन कवियों की रचनाओं पर आधारित 'कवि दरबार' का आयोजन करें|

3. रेडियो, टेलीविज़न तथा इन्टरनेट के माध्यम से इन कवियों की रचनाओं को सुनकर, देखकर गायन का अभ्यास कीजिये|

पाठ से

1. नीचे कुछ वाक्य लिखे गए हैं| इनसे सम्बंधित दोहों को उसी क्रम में लिखिए -

(क) मधुर वाणी औषधि का काम करती है तथा कठोर वाणी तीर की तरह मन को बेध देती है|

(ख) कोई भी कार्य समय पर ही होता है।

(ग) अपने दुख को कहीं उजागर नही करना चाहिए।

(घ) परोपकार करने वाले लोग प्रशंसनीय होते हैं।

(ङ) दूसरे लोगों में बुराई देखना ठीक नहीं।

2. निम्नांकित पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिए -

(क) स्रवन द्वार ह्वै संचरे, सालै सकल सरीर।

(ख) पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।

(ग) बाटनवारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग।

(घ) जो दिल खोजा आपनो, मुझ-सा बुरा न कोय।

(ङ) चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक।

3. माली के द्वारा लगातार पेड़ों को सींचने पर भी फल क्यों नहीं आते हैं ?

4. अपने मन की व्यथा को मन में ही क्यों रखना चाहिए ?

भाषा की बात

1. 'स्रवन द्वार ह्वै संचरे, सालै सकल सरीर'- पंक्ति में 'स' वर्ण की आवृत्ति कई बार होने से कविता की सुन्दरता बढ़ गयी है। जहाँ एक वर्ण की आवृत्ति बार-बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। अनुप्रास अलंकार के कुछ अन्य उदाहरण पुस्तक से ढूँढ़कर लिखिए।

2. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।।

उपर्युक्त दोहे में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं-

मोती के अर्थ में - कान्ति

मनुष्य के अर्थ में - स्वाभिमान

चूना के अर्थ में - जल

एक ही शब्द के कई अर्थ होने से यहाँ श्लेष अलंकार है। श्लेष अलंकार का एक और उदाहरण दीजिए।

3. पाठ में आये निम्नलिखित तद्भव शब्दों का तत्सम रूप लिखिए-

भसम, औषधी, सत, सरीर, मानुस, सबद, किरपा, हरख।

4. कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनके अलग-अलग अर्थ होते हैं, जैसे- 'तीर' शब्द के अर्थ हैं 'बाण' और 'नदी का किनारा।' निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए-

पट, दर, कर, जड़, गोली, सारंग।

इसे भी जानें

हिन्दी के नौ रत्न- कबीर, तुलसी, सूर, देव, भूषण, मतिराम, बिहारी, चन्दबरदाई और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी के नवरत्न माने जाते हैं।

संस्कृत साहित्य में नीति वचनों की समृद्ध परम्परा रही है। हिन्दी में कबीर, रहीम के अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास ने भी नीतिपरक दोहों की रचना की है। तुलसी के नीतिपरक दोहों को भी पढ़ें और समझें।

1. चरन चोंच लोचन रंगौ, चलौ मराली चाल।

छीर नीर बिबरन समय, बक उघरत तेहि काल।।

2. आपु आपु कहँ सब भलो, अपने कह कोइ कोइ।

तुलसी सब कहँ जो भलो, सुजनसराहिअ सोइ